Vol 5 Issue 8 Feb 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 8 | Feb - 2016

प्रेमचन्द के गोदान उपन्यास में राजनीति के विभिन्न रूपों का चित्रण

डॉ. सुमन कुमारी
असि. प्रो. (हिन्दी) , राजकीय महाविद्यालय, चम्पावत, (उत्तराखण्ड)

प्रस्तावना

प्रेमचन्द ने 'गोदान' में तत्कालीन राजनीतिक स्थिति को भी स्पष्ट रूप से उभारा है। राजनीतिक अनुभव पैसे के बल पर खरीद लिया जाता है। श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ वही माना जाता है, जिसके पास पर्याप्त पैसा है। इलैक्शन की हार-जीत के बल पर होती है, जो जितना अधिक पैसा खर्च कर देता है, उसे उतने ही अधिक वोट मिल जाते है। 'गोदान' में तंखा मालती को कौंसिल चुनाव लड़ने के लिये प्रोत्साहित करते हैं, लेकिन मालती परिस्थिति को जानते हुये रानी साहब चन्द्रा के विरूद्ध चुनाव लड़ने से इन्कार कर देती है। यह बात मालती और तंखा के वार्तालाप से स्पष्ट होती है।

प्रेमचन्द के तत्कालीन भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के हथकण्डों के प्रति कठोर आवाज उठाई है। वे नकली राष्ट्रप्रेमियों का पर्दाफाश करते है। मि० तंखा और मिर्जा खुर्शेद दोनों शिकार खेलने साथ-साथ जाते है। तंखा चुनाव के बारे में मिर्जा से चर्चा करते है। मिर्जा चुनाव लड़ने की साफ मना कर देते है।

मुझे अब इस डेमोक्रेसी में भक्ति नहीं रही। जरा सा काम और महीनों की बहस हॉ, जनता की ऑखों में धूल झोंकने के लिये अच्छा स्वांग है। इससे तो कहीं अच्छा है कि एक गर्वनर रहे, चाहे वह हिन्दुस्तानी हो, या अंग्रेज इससे बहस नहीं।[१]

'गोदान' में राजनीतिज्ञों ने राजनीति के क्षेत्र में आना एक व्यवसाय को अपनाना मान लिया है। सच्चा देश प्रेमी, समाज प्रेमी, और परोपकारी कोई भी देखने को नहीं मिलता सभी अपने-अपने स्वार्थ में लिप्त दिखाई देते है। राय साहब को तो 'गोदान' में रंगे सियार की संज्ञा से विभूषित किया है। उनका व्यक्तित्व दुर्मुखी है। वे बचपन से राष्ट्रप्रेमी और किसानों के हितैषी होने का स्वांग करते है, लेकिन कर्म से समय पर राष्ट्र और किसानों का शोषण करने से नहीं चूकते।[१]

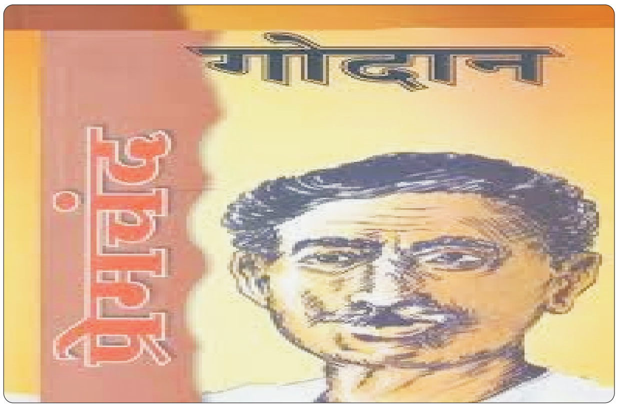

''मेहता के शब्दों में प्रेमचन्द राय साहब के नकली व्यक्तित्व पर व्यंग करते हुये कहते है- ''मैं चाहता हूँ, हमारा जीवन हमारे सिद्धान्तों के अनुकूल हो। आप कृषकों के शुभेच्छु हैं, उन्हें तरह-तरह की रियायत देना चाहते हैं, जमींदारों के अधिकार छीन लेना चाहते है, बल्कि आप उन्हें समाज का शाप कहते हैं, फिर भी आप जमींदार हैं, वैसे ही जमींदार जैसे हजारों और जमींदार है, अगर आपकी धारणा है कि कृषकों के साथ रियासत होनी चाहिये, तो पहले आप खुद शुरू करें, काश्तकारों को बगैर नजराने के लिये पट्टे लिख दें, बेगार बन्द कर दें, इजाफा लगान को तिलांजलि दे दें, चराचर जमीन छोड़ दें।''

राय साहब चुनाव जीत जाने के बाद अपने प्रतिद्वन्द्वी सूर्य प्रताप सिंह को नीचा दिखाने की कोशिश करते है। राजा सूर्य प्रताप के नैनीताल, मंसूरी, और शिमला तीनों स्थानों पर अलग-अलग बॅगले थे। अब राय साहब के लिए लज्जा की बात थी कि उनके बॅगले न हो, अतः उन्होंने शीघ्र ही उक्त स्थानों पर बने बनाये बॅगले खरीद लिये। हर एक बॅगले के लिए माली, चौकीदार, कारिन्दा, खानसामा आदि भी रख दिये गये थे। राय साहब किसानों के प्रति अपनी शोषण नीति की मजबूरी बताते हुये ओंकारनाथ से कहते हैं - कि मुझे किसानों के साथ जलना-मरना है, मुझसे बढ़कर उनका 'हितेच्छु नहीं हो सकता, लेकिन मेरी गुजर कैसे हो' अफसरों को दावत कहाँ से दूँ। सरकारी चन्दें कहाँ से दूँ, खानदान के सैकड़ों आदमियों की जरूरतें कैसे पूरी करूं, मेरे घर का क्या

खर्च है, यह शायद आप जानते हैं, क्या मेरे घर में रूपये फलते हैं, आयेगा तो आसामियों ही के घर से।[7]

'गोदान' में राय साहब और उनके सहयोगी मुखिया आदि स्वराज्य प्राप्त करने के लिए झूठा नारा लगाते है। समाज के लोगों पर अपना सिक्का जमाने के लिए जेल जाते हैं। देश प्रेम की भावना और समाज सेवा आदि मानवीय गुण उनको छू तक नहीं गये। उनके हर सामाजिक कार्य में अपना वैयक्तिक स्वार्थ दिखाई देता है। उनके राष्ट्रहित की धारणा मात्र शब्दों तक ही सीमित है। कहते हैं, कुछ है और करते कुछ हैं, ओंकारनाथ राष्ट्रसेवा के नाम पर ''बिजली'' दैनिक पत्र का सम्पादन करते है। लेकिन धन कमाने के लिए वे भी अपने सिद्धान्तों पर ताक पर रख देते है।

स्वराज्य की मांग करने वाले गॉव के मुखिया होरी की गाय मरने पर उल्टा उसी पर ही आरोप लगवाकर दरोगा को रिश्वत देने को रूपये लाकर दे देते है। उनका स्वार्थ है, होरी जन्म भर उनका कर्जदार बना रहे। धनिया को जब इस बात का पता लगता है तो वह इन लोगों को खूब खरी-खोटी सुनाती है। धनिया ने एक ठोकर और जमायी, जिसके रूपये हों, ले जाकर उसे दे दो। हमें किसी से उधार नहीं लेना है और जो देना है तो उसी से ले लेना, मैं दमड़ी भी न दूँगी, चाहे मुझे हाकिम फांसी पर ही क्यों न चढ़ा दे।

हम बाकी चुकाने को पच्चीस रूपये मांगते थे, किसी ने न दिया। आज उँगली-भर रूपये ठनाठन निकाल कर दे दिये, मैं सब जानती हूँ यहॉं तो बॉट-बखेरा होने वाला था। सभी के मुँह मीठे होते। ये हत्यारे गॉव के मुखिया है, गरीबों का खून चूसने वाले, सूद-ब्याज, डेढ़ी-सवाई, नगर-नजराना, घूस-घांस, जैसे भी हो, गरीबों को लूटों। उस पर सुराज चाहिये। जेल खाने जाने से सुराज न मिलेगा। सुराज मिलेगा धर्म से न्याय से।

'गोदान' में तत्कालीन विषाक्त राजनीति का यर्थात चित्र प्रतिबिम्बित हो उठा है। प्रेमचन्द ने अपने कथा-साहित्य में राष्ट्रीयता आन्दोलन एवं उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न राजनीतिक चेतन पर तो प्रकाश डाला साथ ही उन्होंने सरकार की नीति एवं शासन व्यवस्था की अनैतिकता की पोल भी खोल दी है।

प्रेमचन्द भारत को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति दिलवाकर ऐसी समाज व्यवस्था को प्रश्रय देना चाहते थे, जिसमें शोषण का लेष न हो, समाज में आर्थिक वैषम्य को दूर कर ऐसी समाज-व्यवस्था का स्वप्न देखते है, जिसमें एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण न कर सके।

अतः स्पष्ट रूप से प्रेमचन्द ने 'गोदान' उपन्यास में पात्रों के माध्यम से राजनीति के विभिन्न पहलुओं को बखूबी दर्शाया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

१.गोदान -मुंशी प्रेमचन्द
२.गोदान- सौन्दर्य और समीक्षा - प्रो. रामकृष्ण मिश्र
३.गोदान- पुनर्मूल्यांकन - डॉ. राजपाल शर्मा
४.प्रेमचन्द साहित्य में व्यक्ति -डॉ. रक्षापुरी और समाज

फुटनोट

१.प्रेमचन्द - गोदान - पृ.सं. - ८०
१. प्रेमचन्द - गोदान - पृ.सं.- १२१
१.२. प्रेमचन्द - गोदान - पृ.सं. - १२२
२.१. प्रेमचन्द - गोदान - पृ.सं. - ६७

डॉ. सुमन कुमारी
असि. प्रो. (हिन्दी) , राजकीय महाविद्यालय, चम्पावत, (उत्तराखण्ड)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org